ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-11* February-2021
Anthology : The Research

भारतीय संस्कृति के सार्वकालिक और सार्वभौमिक आदर्श – कोरोना पश्चात् विश्व के मार्गदर्शक

The Timeless and Universal Values of Indian Culture – the Guide to the World in Post Covid -19 Era

Paper Submission:10/02/2021, Date of Acceptance: 23/02/2021, Date of Publication: 24/02/2021

अंजू सेठ
सह प्राध्यापक,
संस्कृत विभाग,
सत्यवती महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली भारत

सारांश

भारत देश संपूर्ण विश्व के गुरु के रूप में प्रतिष्ठित रहा है। वैदिकी संस्कृति के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धान्त और जीवन दर्शन जीवन जीने की कला सिखाते हैं। वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व कोरोना के आघात के कारण न केवल भौतिक रूप से वरन् मानसिक व्यथाओ और दिशाहीनता से पीडित है। आवश्यकता है विश्व में सकारात्मकता और आशा का संचार करके विश्व को पुनर्जाग्रत करने की। संस्कृत साहित्य इस विषय में विशिष्ट सहायक सिद्ध होता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्'की भावना से ओतप्रोत संस्कृतसाहित्य उस सहज जीवनपद्धति का संचार करता है जिसमें 'स्व' से बढ़कर 'पर' है। 'स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्'जहाँ अपने देश का कल्याण तो है साथ ही साथ अन्य देशों की सहायता भी सम्मिलित है चाहे वह चिकित्सापद्धति के माध्यम से हो अथवा औषधि इत्यादि के माध्यम से हो। हमें कोविड के निराशापूर्ण समय में भी न केवल अपने देश का कल्याण अपितु विश्वकल्याण की भावना भी

संस्कृत साहित्य बताता है। संभवतः संस्कृतसाहित्य के संस्कार एवं शिक्षाएँ ही हमें 'सौमनस्यं कृणोमि वः'अथवा ''मा विद्विषामहे'की भावना से ओतप्रोत करती है।

India has always been the guide to the world. The timeless anduniversal principles and values of indian culture preaches the way to lead life. In present times, the world is suffering, not only materialistically, rather due to psychological problems and directionlessness. The need is to revive the positivism and optimism and reawaken the world. The Sanskrit literature comes forth as the greatest ally in this hour of need. Inspired by the sense of *VasudhaivaKutumbakam*, it promotes simple, natural life style that encourages selflessness. Hence, along with the betterment of our people, India cares for neighboring countries as well, with respect to treatment and medicines. Even in the gloomy Post Covid -19 Era, the Sanskrit literature teaches to be hopeful.

मुख्य शब्द : भारतीय जीवन पद्धति, कोरोनाकाल, सकारात्मकता, सौंमनस्यं, संस्कृत, संस्कृति, साहित्य, आत्मनिर्भर भारत।
Indian Lifestyle, Corona, Positivism, Saummanasya, Sanskrit, Sanskriti, Literature, Aatmanirbhar Bharat

प्रस्तावना

भारत देश और सनातन वैदिक धर्म अपनी बौद्धिक और अध्यात्मिक ज्ञान राशि के कारण संपूर्ण विश्व के गुरु के रूप में प्रतिष्ठित रहा है। विश्व की प्राचीनतमा वैदिकी संस्कृति के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धान्त और जीवन दर्शन जीवन जीने की कला सिखाते हैं। पुरुषार्थचतुष्टय के रूप में मानव जीवन के उद्देश्यों को परिभाषित करके जीवन में सकारात्मकता का संचार और लक्ष्य के प्रति उन्मुख रहने का संदेश देने के साथ ही मानव को धर्म का पालन करने की शिक्षा देने वाली यह संस्कृति विपरीत परिस्थिति में भी धैर्य पूर्वक सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करती है। यही कारण है कि जब जब विश्व निराशा के अन्धकार का सामना करता है, वह नेतृत्व और मार्गदर्शन के लिए भारत ही की ओर देखता है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है संस्कृत साहित्य में उपलब्ध सार्वकालिक और सार्वभौमिक जीवन दर्शन और आशा के संदेश के प्रसार के द्वारा संपूर्ण संसारको आशान्वित करना और पुनः प्रगति के पथ पर अग्रसर करना।

भारत भूमि देवभूमि है जहाँ सर्वत्र सहजता एवं सकारात्मकता का साम्राज्य है। इस देवभूमि की भाषा अक्षरा अघ्नया संस्कृत भाषा है जो निरन्तर प्रवाहमान है तथा अपनी अनुपम ज्योति से प्रत्येक अवस्था में सम्पूर्ण विश्व को दैदीप्यमान करती रहती है। इसी देवभूमि भारत हेतु सगौरव वर्णित किया गया –

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।[1]

भारतीय जीवनपद्धति मानव को 'जीने की कला' सिखाती है उसमें ''असंभव'' शब्द की संकल्पना नहीं है। यह जीवनपद्धति सिसकती, रोती, परेशान परेशान होती मानवता को प्रत्येक क्षण नवजीवन से मुक्त कर देती है। अतीव सौभाग्य का विषय माध्यम एवं स्रोत है कि 'संस्कृत' सदृश देवभाषा हमारे श्वास के कणकण में रक्त की प्रत्येक बूँद में वह जीवन्त तत्त्व संचारित कर देती है जो हमें अपने देश भारत एवं भारतीयता की पताका सर्वत्र फहराने का माध्यम एवं स्त्रोत बना देती है।

वास्तव में देश निर्माण में नागरिकों के साथ–साथ तत्कालिक साहित्य, सभ्यता एवं संस्कृति का भी अनुपम योगदान रहता है। देशवासियों की सकारात्मक अथवा नकारात्मक सोच एवं चिन्तन परम्परा का दायित्व भी इन्हीं तत्त्वों पर आश्रित रहता है। इस विषय में संस्कृतभाषा एवं संस्कृतसाहित्य सकारात्मक सोच की मशाल लेकर सम्पूर्ण विश्व का मार्ग प्रशस्त करते हुए आपत्ति के समय पर अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य कर जाती है क्योंकि संस्कृतभाषा एवं साहित्य के विषय में ही कहा गया –

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः,
यं कामये तंतमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ।[2]

वर्तमान समय कोरोना के आघात से प्रताड़ित सम्पूर्ण मानवता को समेटकर, संभालकर, सुरक्षितकर भविष्यकाल का हेतु तैयार करने का है जिसमें मानव भूतकाल, वर्तमानकाल एवं भविष्य काल को एक साथ चिन्तन मनन करता हुआ इस आपत्ति से, मुक्ति का उपाय खोज निकाले। संस्कृतसाहित्य इस विषय में विशिष्ट सहायक सिद्ध होता है।

संस्कृतसाहित्य की सहजता एवं सबको भावना सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्व सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।[3]

''वसुधैव कुटुम्बकम्''[4] की भावना से ओतप्रोत संस्कृतसाहित्य उस सहज जीवनपद्धति का संचार करता है जिसमें 'स्व' से बढ़कर 'पर' है।

'स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्''

जहाँ अपने देश का कल्याण तो है साथ ही साथ अन्य देशों की सहायता भी सम्मिलित है चाहे वह चिकित्सापद्धति के माध्यम से हो अथवा औषधि इत्यादि के माध्यम से हो। हमें कोविड के निराशापूर्ण समय में भी न केवल अपने देश का कल्याण अपितु विश्वकल्याण की भावना भी संस्कृतसाहित्य बताता है। संभवतः संस्कृतसाहित्य के संस्कार एवं शिक्षाएँ ही हमें ''सौमनस्यं कृणोमि वः''[5] अथवा ''मा विद्विषामहे''[6] की भावना से ओतप्रोत करती है।

''कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः''[7] का सिद्धान्त हमें किसी का भी बुरा करने व सोचने से निवृत्त करता है।

हमारी संस्कृति एवं जीवनपद्धति सत्याश्रित है।

''सत्येनोत्तमिता पृथ्वी''[8]

हम भारतीय ''सत्यमेव जयते'' का उद्घोष करते हुए अपने लक्ष्यों को प्राप्त करते रहे हैं। हमारी संस्कृति एवं जीवनपद्धति में ''जो वास्तविक स्थिति'' है वही दिखाई जाती है जहाँ ''दुराव'', ''छुपाव'' एवं असत्य तथ्यों के आधार पर विडम्बनाओं का सृजन नहीं है। कोरोना के समय पर सत्य वचन, सत्य तथ्य एवं सत्य आँकड़े चिकित्सा हेतु अत्यन्त अनिवार्य है ''सत्यं वद धर्मं चर''[9] की शिक्षा प्रत्येक विद्यार्थी को दी जाती है।

संस्कृतसाहित्यनिष्ठ भारतीय जीवनपद्धति का मुख्य आधार धर्म है। धर्म से अभिप्राय जातीयता प्रान्तीयता नहीं अपितु व्यवस्था, अनुशासन ही है महाभारत में कहा गया –

धारणाद्धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः।

यत्स्याद्धारणसंयुक्तं स धर्म इति निश्चयः॥

तथा

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्।
आचारश्चैव साधूनां आत्मनस्तुष्टिरेव च।

कोरोनाकाल में जब हमारे मन–मस्तिष्क एवं आर्थिकी प्रणाली पर अत्यन्त तीव्राघात हो रहे हैं उस समय स्वानुशासन, स्वप्रबन्धन, स्वनियमन ही सबसे बड़ा धर्म है। जब हम अनुशासित होंगे। हमारे श्रेष्ठ अनुशासित होंगे तभी सामान्यजन भी सोशल डिस्टेंसिंग, नियमनादि नियमावली या गाईडलाईन का पालन करेंगे क्योंकि

''यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः''[10] प्रजा तो अनुकरण ही कर सकती है।

संस्कृतसाहित्य की जीवनपद्धति हर परिस्थिति, हर क्षण में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हुए ''उतिष्ठं जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत्''[11] इस संकल्प का उद्घोष करती हुई सर्वत्र उत्साह का संचार कर जाती है। हमारी सकारात्मक जीवनपद्धति संस्कृत साहित्य एवं भाषा के माध्यम से यह भी संदेश देती है कि यदि महामारी या आपदा आई है तो वह समाप्त भी होगी क्योंकि –

''चक्रवत् परिवर्तन्ते सुखानिदुःखानि च''[12]

तथा

''समय एव करोति बलाबलम्।''[13]

अर्थात् समय का चक्र है। कल यह सारे दुख समाप्त होंगे फिर विश्व में भारत में खुशहाली लौटेगी। यही आशा का संचार मानव में आपदा से लड़ने की शक्ति भर देता है और वह दुगुने उत्साह से अपने कर्मों की पूर्णता की ओर लग जाता है। संस्कृतसाहित्य की जीवन कर्म तो व्यक्ति को अवश्य करने हैं।

''नियतं कुरु कर्म त्वम्''[14]

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन''[15]

का उपदेश जो भगवद् गीता में श्रीकृष्ण ने दिया था। वह उपदेश आपदा के समय पर शक्तिहीन, विचारशून्य मानवता में प्राणसंचार कर देता है –

''हतो वा प्राप्यसि स्वर्गं जित्वावा भोक्ष्यसे महीम्''[16]

''तस्मादुतिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः''

अर्थात् उठो और अपने कर्तव्य करो। लाकडाउन के खुलने पर भी सेंट्रल गाईडलाईन का अनुपालन करते हुए अपनी रक्षा स्वयं करते हुए कर्म करो।

''उद्धरेदात्मनाऽत्मानं नात्मानमवसादयेत्।''[17]

सकारात्मकता से वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यही अभिप्राय है कि मन, वचन एवं कर्म की सकारात्मकता। प्रत्येक मनुष्य को उच्चमनोबल से युक्त रहना है। किसी भी क्षण अवसाद, चिन्ता या भय को अपने मनमस्तिष्क पर हावी नहीं होने देना।

''मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धन मोक्षयो''[18]

''तन्मेमनः शिवसंकल्पमस्तु''[19]

''आशा हि परमं ज्योति''।

निराशा, भय एवं चिन्ता का त्याग कर आपदा से, परिस्थिति से कैसे निपटना है यह शक्ति वहाँ लगानी है ताकि कोरोना सदृश महामारी हमारे मनमस्तिष्क को अवसाद के ढेर से कलुषित न कर दे। तभी तो मन के विषय में कहा गया –

''यत् प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च।''[20]

संस्कृतनिष्ठ भारतीय सकारात्मक जीवनपद्धति में वचन की सकारात्मकता तथा उद्देश्यपूर्णता का विशिष्ट महत्त्व है।

''एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुग् भवति।''[21]

''सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत''[22]

अर्थात् वचन की सत्यता, सकारात्मकता ही उद्देश्यपूर्ति हेतु अनिवार्य है। नेता हो या अभिनेता, उद्योगपति हो या सामान्य व्यक्ति, मीडियाकर्मी अधिकारी, उनके वचन प्रेरणाएँ प्रसारित करना चाहिए। इस आपदामुक्त अवसर पर या तो देशवासियों में उत्साह भर देंगे या एक भी वचन उनको हतोत्साहित कर देने अतः सोशल मीडिया पर छपी, कटी सम्पूर्ण तथ्यों को जनसामान्य में उत्साहित अथवा हतोत्साहित की कसौटी पर कस कर ही प्रसारित करना चाहिए ताकि वर्तमान समय पर जनसामान्य का मन निराश न हो।

हमारी सकारात्मक जीवनपद्धति में प्रत्येक मानव समान है, आदर का पात्र है अभिवादन के योग्य है। ''आदर करो आदर पाओ'' की भावना सर्वत्र प्रसारित है। नारी का सम्मान ''गृहिणी गृहमुच्यते'' की भावना आज भी हमारे समाज में ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'' के उद्घोष में प्रत्यक्ष रूपान्वित एवं क्रियान्वित हो रही है। क्योंकि बेटियाँ ही हमारा भविष्य है आगे चलकर देश का भविष्य हमारे युवाओं के हमारी शिक्षित बेटियों पर आश्रित हैं।

''आत्मनिर्भर'' भारत एवं सर्वत्र आदरणीय भारत की संकल्पना भी संस्कृतसाहित्य में सर्वत्र है। यह भी सकारात्मक जीवनपद्धति का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष है। अपने को आगे बढ़ाओ।

''आत्मदीपो भव''

''आत्मानं विद्धि''

अर्थात् स्वयं को पहचानो, विश्लेषण करो एवं देशहित हेतु यहीं रहकर स्वदेश को आगे बढ़ाओ युवकों को

''स्वधर्मे निधनं श्रेयः
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।''[23]

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी का संदेश देकर स्वदेश प्रेम, स्वदेशी वस्तुओं से प्रेम तथा स्वदेशी कर्मों से प्रेम करने का आग्रह करती है।

भारतीय जीवनपद्धति की मुख्य विशेषता यज्ञ संकल्पना, योग की उद्भावना एवं आयुर्वेद का अधिकाधिक प्रयोग है जिसके माध्यम से शुद्धाहार में भी पर्याप्त रूचि जाग्रत होती है तथा व्यक्ति सकारात्मक भोजन, सकारात्मक पर्यावरण एवं उससे उद्भूत सकारात्मक चिन्तनपरम्परा से संवलित होता है।

निष्कर्ष

अतएव उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर संस्कृतसाहित्यनिष्ठ भारतीय जीवनपद्धति के सहज एवं सकारात्मक पक्षों को अपनाकर हम सभी वर्तमान ज्वलन्त समस्याओं, आपदाओं, महामारी, मानसिक (आधि), शारीरिक (व्याधि) आर्थिक समस्याओं से पूर्णतया मुक्ति पा सकते है। अपने मनमस्तिष्क को पूर्णतया सकारात्मक विचारों से पुष्ट करते हुए शरीर को स्वस्थ रखने के उपाय खोज सकते है और भारत एवं भारतीयता की ध्वजा सम्पूर्ण विश्व में फहराने की अपने परम ध्येय को प्राप्त कर सकते है। हमारी मानसिकता, हमारी विचारधारा, हमारी श्रद्धा अवश्य ही हमें प्रत्येक आपदारूपी शत्रु से मुक्ति दिलाएगी इति मे विश्वासः अन्ते कथनीयमिदम् –

''देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥''[24]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *मनुस्मृति 1.139*
2. *ऋग्वेद 10.125.5*
3. *गरुड़पुराणः 35.51*
4. *महोपनिषद् 4.71*
5. *अथर्ववेद 3.30.1*
6. *कठोपनिषद् 19*
7. *अथर्ववेद 7.52.28*
8. *ऋग्वेद 10.85.1*
9. *तैत्तिरीयोपनिषद्–शिक्षावल्ली 11.1*
10. *श्रीमद्भगवद्गीता 3.21*
11. *कठोपनिषद् 14*
12. *महाभारत*
13. *शिशुपालवधम् 6.44*
14. *श्रीमद्भगवद्गीता 3.8*
15. *श्रीमद्भगवद्गीता 2.47*
16. *श्रीमद्भगवद्गीता 2.37*
17. *श्रीमद्भगवद्गीता 2.5*
18. *ब्रह्मबिन्दूपनिषद् 2*
19. *शुक्लयजुर्वेद 34.1–6*
20. *शुक्लयजुर्वेद 34.3*
21. *महाभाष्य 6.1.84*
22. *महाभाष्य 1.1*
23. *रामायण, हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, 1930, 6.124.17*
24. *दुर्गासप्तशती*